सास-बहू के संबंधों को प्रभावित करने वाले सामाजिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक कारकों का अध्ययन

मनोविज्ञान विषय में पी-एच.डी. उपाधि की प्राप्ति हेतु प्रस्तुत
शोध प्रबन्ध का प्रारूप

निर्देशक

शोध छात्रा
वन्दना चौहान
एम.एस-सी. मनोविज्ञान

मनोविज्ञान विभाग
देव संस्कृति विश्वविद्यालय
गायत्री कुंज, शांतिकुंज, हरिद्वार
उत्तरांचल - 249411

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

सास–बहू की संबंध कथा रोज कई तरह से कहीं–सुनी जाती है। पत्र पत्रिकाओं में छपने वाले काले रंगीन अक्षरों, इलेक्ट्रनिक मीडिया में जगमगाती तस्वीरों व सिनेमा के रजत पट से से लेकर आम नागरिक के आंगन तक इस कथा के नए–नए पहलू होते रहते हैं। इन संबंधों में अपनेपन व पराएपन का जादू भरा तिलस्म कुछ ऐसा है जो आम आदमी के पारिवारिक जीवन को प्रेरक व प्रभावित किए बिना नहीं रहता। इसकी वजह से कहीं मिलाप की मधुर रागिनी सुनायी देती है, तो कहीं इसी कारण विलाप का करूण कन्दन आखिर क्या है? इन संबंधों के सम्वेदना तन्तुओं की बनावट किस तरह की है? ये ऐसे सवाल हैं जो अपने जवाब के लिए गहरे और व्यापक शोध अनुशासन की मांग करते हैं।

क्योंकि इसी शोध अनुसन्धान के निष्कर्ष में पारिवारिक जीवन की सुख शान्ति व समृद्धि का रहस्य छुपा है। इसी निष्कर्ष के बलबूते फिर से एकल परिवारों को संयुक्त परिवार के रूप में गढ़ने–ढालने की कोशिश की जा सकती है। संवेदना भरे सहयोग व सहकार के उजड़ते पारिवारिक उद्यान को फिर से हरा–भरा किया जा सकता है। परिवारों में पनपती दरारें को फिर से उठाया जा सकता है। सास–बहू के संबंधों के अन्वेषको का यह कहना है कि कभी भारत में वसुधा को कुटुम्ब बनाने की सम्वेदनशील परियोजना प्रारम्भ की गयी थी। आज हालत यह आ पहँची है कि सास–बहू के संबंधों के उलझते–टूटते धागों की वजह से अपने निजी कुटुम्ब का आस्तित्व भी खतरे में पड़ गया है।

भारतीय परिवारों की संरचना का स्वरूप एवं ढांचागत विशेषताएँ यह अनुभव कराती हैं कि सास–बहू के संबंध सूत्रों की बुनावट मनोसामजिक है यदि इन मनोसामाजिक कारकों का तथ्यात्मक अध्ययन एवं विश्लेषण--विवेचन कर लिया जाय तो इन संबंधों के सच की तह तक पहुँचा जा सकता है। इस अध्ययन के निष्कर्ष न सिर्फ समस्या के सच को समझने में सहायक होंगे, बल्कि समाधान की ओर भी इंगित करेंगे और समाधान का सम्पूर्ण ढांचा गढ़ने–ढालने में मदद करेंगे।

बात मनासामाजिक कारकों के संबंध में उठायी गयी है, तो इन कारकों के मुख्यतया दो आयाम हैं 1. मानिसिक एवं 2. सामाजिक। इनमें से पहले यानि कि मानसिक कारकों का सम्बन्ध सास और बहू की मनःस्थिति व उनकी मानसिक संरचनाओं से है। और दूसरे यानि कि सामाजिक कारकों का संबंध सास और बहू की सामाजिक–आर्थिक दशा से है। यदि इन दोनों आयामों की गहरी छान–बीन की जाय तो वे तमाम कारण उजागर हो सकते हैं, जो सास व बहू के संबंधों को बनाने व बिगाड़ने में अपनी भूमिका निभाते हैं। और इन संबंधों में अपनेपन

का अमृत या फिर परायेपन का विष घोलते हैं। इनके पारस्परिक संबंध सूत्रों को मिलाकर मजबूत बनाते अथवा इन तन्तुओं को तनाव देने, उलझने और अन्ततोगत्वा टूटने पर मजबूर करते हैं।

इस कम में सबसे आवश्यक है मानसिक कारणों की विवेचना। यह पहले ही जाना जा चुका है कि मानसिक कारकों का सीधा संबंध सास व बहू की मानसिक संरचना से है। इसमें जड़ जमाए बैठे हुए आग्रहों, मान्याताओं, आंशंकाओं, भ्रमों, प्रवृतियों व विचारों से है। प्रायः यह देखा जाता है कि सास अपनी बहू के प्रति एवं बहू अपनी सास के प्रति एक पुर्व निर्धारित विश्वास से भरी होती है। और जब ये संबंध प्रारम्भ होते हैं। तो ये परस्पर के जीवन कम को, इसकी परिधि में घटने वाली प्रत्येक छोटी–बड़ी बातों को इसी खास ढंग से देखने की कोशिश करती हैं। भले ही यह ढंग कितना ही गलत क्यों न हो?

मानसिक कारकों में आकांक्षाओं आशाओं व अरमानों का भी कम है। इस कम में व्यतिकम होने पर सामाजिक कारकों के विविध आयाम मानसिक संरचना का स्वरूप तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका तय करते हैं। सामाजिक कारकों के विस्तार में प्रथा–परम्पराएँ, रीति–रिवाज, स्थान विशेष की संस्कृति, खास तरह की सांस्कृतिक मान्यताएँ, विशेष ढंग के पारिवारिक, सामाजिक मूल्य, शैक्षणिक योग्यता व स्थिति एवं आर्थिक स्तर सभी कुछ इसमें समाहित होता है। इनमें से प्रत्येक संबंध के तन्तुओं की मजबूती व इनकी बुनावट व बनावट में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है संबंधों ,के आयाम इन्हीं सामाजिक कारकों के अनुसार बनते व विकसित होते हैं।

सम्बन्धों को तय करने वाले एक सामाजिक कारक का सच दूसरे सामाजिक कारक की स्थिति में बदल जाता है। उदाहरण के लिए एक तरह की मान्यताओं, प्रथाओं, परम्पराओं वाले समाज में सास–बहू के सम्बन्धों का एक रूप देखने को मिलता है, तो दूसरे में इसका रूप भिन्न नजर आता है। लगभग यही स्थिति शिक्षा व आर्थिकता के बदलते आधारों के अनुसार भी देखने को मिलती है। सम्बन्धों की साइकोसोशल डायनामिक्स या मनोसामाजिक गत्यात्मकता के अनुसार सास–बहू के सम्बन्धों में नए–नए रंग, नए–नए रूप व नई–नई अवस्थाएँ उभरती दिखाई देती हैं। इसी के अनुयप इन सम्बन्धों में कहीं प्रसन्नता का सैलाब उमड़ता है , तो कहीं पीड़ा की आहें सुनाई देती हैं।

इसके यथार्थ को सास–बहू के सम्बन्धों की मनोसामाजिक के विविध आयामों के तथ्यात्मक अध्ययन, इसके विश्लेषण, विवेचन एवं निष्कर्षों के आधार पर ही जाना जा सकता है और तभी पता चल सकता है कि इन सम्बन्धों की मधुरता या तिक्तता के राही कारण क्या है?

और किस विधि से इनका निवारण–निराकरण सम्भव है। इस शोध अनुसंधान का महत्व इसी बात से है कि इन सम्बन्धों के सच को जाने बगैर संयुक्त परिवार व अपने कुटुम्ब की ढांचागत इकाई और इसमें नहित मूल्यों को किसी भी तरह बचाए रख पाना सम्भव नहीं है। भारतीय संस्कृति व सभ्यता के सारे पारिवारिक सुख–शांति व कुटुम्ब के सौहार्द्र में है। प्रकारान्तर से इस तरह के शोध अध्ययन से इस सुख–शांति के खोए–विखरे सूत्र फिर से एक जुट किए जा सकेंगे।

यह भी परिकल्पना है कि जीवन के आध्यात्मिक रूझान के कारण सम्भवतः मधुर सम्बन्ध स्थापित होते हैं। धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन से स्पष्ट है कि परम पिता परमात्मा के प्रति समर्पित एवं उनके गुणों को धारण कर मनुष्य में देवत्व का उदय हुआ है। अंगुलीमाल जैसे लुटेरे का सतपुरूष, साधु के रूप में परिवर्तित होने की घटना एवं कई ऐसी घटनाएँ इस तथ्य के साक्षी हैं।

भारतीय संस्कृति के इन खोए हुए सूत्रों की एक झलक बाबा तुलसी की रामायण में मिलती है। अयोध्या कांड के रामविवाह प्रकरण में महाराज दशरथ कौशल्या आदि रानियों से कहते हैं– **बधु लरिकिनी पर घर आई। रखिहउ इन्हहिं प्रान की नाई।।** अर्थात् 'अपनी बहुएँ अभी बालिकाएँ हैं। पराए घर से आई हैं। इन्हें तुम अपने प्राणों की तरह से संभाल कर रखना'। आज यह संस्कृति–सत्य किस भाँति से हमारे पारिवारिक जीवन में चरितार्थ हो सकता है। इस विशिष्ट अध्ययन के निष्कर्ष एवं सुझाव निश्चित ही अपने भारतीय परिवारों की शांति और सौहार्द्र को नव सांस्कृतिक प्रतिष्ठा सिद्ध करने वाले साबित होंगे।

Literature Review

P. Kumar and Rupa P. Maniya (1987). "Sexuality and Marital Adjustment". इस अध्ययन में सेक्सुएलिटी एवं वैवाहिक समायोजन के संबंधों की परीक्षा करने का प्रयास किया गया है। इस के अन्तर्गत कुमार एवं रोहतगी द्वारा निर्मित 'मैरीटल एजजस्टमेंट क्वैश्चनायर' पर आए प्राप्तांकों के आधार पर उच्च समायोजन (27 प्रतिशत) एवं निम्न समायोजन वाली पत्नियों का चयन दो कसौटियों के निर्माण हेतु किया गया। प्रत्येक कसौटी समूहों में 54 प्रयोज्यों को रखा गया इसके उपरान्त दो समूहों की सेक्सुएलिटी में भिन्नता की जॉच हेतु कुमार द्वारा निर्मित 'सेक्सुएलिटी स्केल' का प्रयोग किया गया। परिणाम में पाया गया कि उच्च रूप से समायोजित पत्नियॉ अपने वैवाहिक जीवन में लैंगिक समायोजन के स्तर से भली प्रकार संतुष्ट थीं। वहीं दूसरी ओर निम्न रूप से समायोजित पत्नियॉ अपने वैवाहिक जीवन में उच्च लैंगिक असंतुष्टि महसूस करती थीं। ।

C.P. Khokhar and Yama Thakur (1998) इस अध्ययन में दो भिन्न औद्योगिक संगठनों (बी.एच.ई.एल., हरिद्वार एवं आई.डी.पी.एल., ऋषिकेश) के वैवाहिक रूप से समायोजित एवं कुसमायोजित जोड़ों को उनके आर्थिक स्थिति, वैवाहिक जीवन अवधि एवं व्यक्तित्व कारकों के बीच तुलना करने का प्रयास किया गया है। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण टी–परीक्षण द्वारा किया गया है। परिणामों में पाया गया कि आर्थिक स्तर पर वैवाहिक जीवन में समायोजित एवं असमायोजित जोड़ों में कोई फर्क नहीं है। परन्तु उनकी वैवाहिक जीवन अवधि उनके वैवाहिक समायोजन को प्रोत्साहित करती है। पत्नियों का शर्मीलापन अथवा झेंपने का शीलगुण एवं पलायनवादी शीलगुझा उनके वैवाहिक संबंधों में असमायोजन का संकेत करते हैं।

Pattanayak, B., Panda, Minati, Mohanty, Susmita (1997). "Impact of family structure and gender bias on stress and coping styles. An empirical Study." इस अध्ययन के अन्तर्गत तनाव एवं कोपींग पर अनुक्रिया करने वाले दोनों तरह के परिवारों (संयुक्त परिवार, न्यूकिलियर फैमिली) से 100 पुरूषों एवं महिलाओं वाले प्रतिदर्श का निर्माण किया गया। परिणाम में पाया गया कि न्यूकिलियर परिवारों में मनोवैज्ञानिक तनाव की मात्रा संयुक्त परिवारों की अपेक्षा अधिक पाई जाती है। संयुक्त परिवारों के प्रयोज्यों में न्यूकिलियर परिवारों के प्रयोज्यों की अपेक्षा बढ़िया कोपींग विहेवियर होता है। तनावपूर्ण परिस्थितियों में पुरूषों का कोपींग विहेवियर महिलाओं से बढ़िया होता है।

Panna, Akhani and Neelam Sharma (1999). "Indian Wives-Their Roles, Marital adjustment and counseling". इस अध्ययन के अनुसार तीव्र औद्योगिक एवं आधुनिकीकरण के कारण वर्तमान में भारतीय महिलाओं की भूमिका में उल्लेखनीय परिवर्तन आया है। 40 करोड़ महिलाओं में से 8 करोड़ 14 लाख महिलाएँ कार्यशील महिलाएँ हैं। पिछले कुछ वर्षों में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता एवं शिक्षा का अवसर मिलने के कारण हमारे समाज में महिलाओं की स्थिति एवं स्तर में सार्थक परिवर्तन आया है। परन्तु इन सब के बावजूद पति–पत्नी के बीच वैवाहिक असमायोजन के मामले बढ़ते चले जा रहे हैं। इसका कारण पति एवं पत्नी द्वारा एक दूसरे से अधिक अपेक्षाएँ रखना बतलाया गया है। इस अध्ययन के अन्तर्गत भारतीय महिलाओं की परिवार एवं समाज में बदलती भूमिका, उनके आर्थिक स्तर तथा वैवाहिक समायोजन पर इसके पड़ रहे प्रभावों पर हमारा ध्यान केन्द्रित किया गया है तथा वैवाहिक समायोजन में फैमिली कॉउन्सलिंग (पारिवारिक परामर्श) की भूमिका क्षमता को तौलने का प्रयास किया गया है।

Khokhar, C.P. & Agarwal, Anjali (1990) . "Marital Adjustment and its effect on parenting." इस अध्ययन में पालन–पोषण शैली पर वैवाहिक समायोजन के पड़ते प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। इस अध्ययन में कुमार एवं रोहतगी द्वारा निर्मित 'मैरीटल एडजस्टमेंट क्वैश्चनायर' पर प्राप्त प्राप्तकों के आधार पर वैवाहिक रूप से समायोजित तथा असमायोजिहत जोड़ों को दो श्रेणियों में बांटकर 100 जोड़ों का प्रतिदर्श निर्माण किया गया। इसके उपरान्त इस पर खोखर एवं चौधरी द्वारा निर्मित 'मल्टीडाइमेंशन पैरेन्टिंग स्केल' को प्रयुक्त किया गया। परिणामों में वैवाहिक रू॰ से मायोजित जोड़ों की 'बच्चा पालन नीति' में प्रोत्साहन (emcourgment) स्वतंत्रता (independence), प्रभाव (dominance) उच्च रूप में व्याप्त पाए गए। वहीं वैवाहिक रूप से असमायोजित पति–पत्नी की 'बच्चा पालन रीति' (Chilfd rearing practices) में नफरत, एवं निर्भरता (dependency) जैसी आयाम ज्यादा स्पष्ट पाए गए।

यह अध्ययन इस बात का खुलासा करता है कि पति–पत्नी के बीच वैवाहिक कलह बच्चों में इमोशनल डिस्आर्डर और परिवार में बच्चों के समायोजन के संबंधित है। इस अध्ययन में कुमार एवं रोहतगी के 'मैरीटल एडजस्टमेंट क्वैश्चनायर' पर प्राप्तांकों के आधार पर वैवाहिक कलह एवं वैवाहिक समायोजन वाले 300–300 जोड़ों का चयन किया गया। सभी जोड़ों के पास 5 से 12 वर्ष के बच्चे थे। प्रयोज्यों पर 'रिलेशन डायमेंशन स्केल' एवं 'चाइल्ड विहेवियर चेकलिस्ट' प्रयुक्त किया गया। परिणाम में पाया गया कि वैवाहिक कलह वाले जोड़ों के बच्चों में इमोश्नल एवं कन्डक्ट डिस्आर्डर का स्तर उच्च था। ऐसे जोड़ों के बच्चों का परिवार समायोजन भी निम्नस्तरीय था। वैवाहिक कलह अभिभावक–बच्चा संबंधों को प्रभावित कर रहा था।

उद्देश्य (Objectives)

उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए वर्तमान शोध के निम्नलिखित उद्देश्य है:

1) प्रतिवादियों के सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का वर्णन।
2) सास–बहू के बीच सम्बन्धों के कुछ प्रमुख आयामों का अध्ययन करना।
3) सामाजिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक कारकों के आधार पर सास–बहू की रूपरेखा (Profile) तैयार करना।
4) सामाजिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक कारकों का सास–बहू के सम्बन्ध (सांवेगिक समायोजन) पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
5) अध्ययन की उपलब्धियों के अन्तर्निहित रहस्यों का उद्घाटन।

शोध विधि (Methodology)

समस्या (Problem)

सास–बहू के बीच सम्बन्धों (सांवेगिक समायोजन) का अध्ययन करना।

चर (Variables)

स्वतंत्र चर (Independent Variables)

- सामाजिक कारक (Socio factors) – शिक्षा, सामाजिक आर्थिक स्तर, परिवेश (शहरी, ग्रामीण)।
- मनोवैज्ञानिक कारक (Psychological factors) – आत्महीनता–असुरक्षा आधुनिकीकरण।
- आध्यात्मिक कारक (Spiritual factord) – आध्यात्मिक स्तर ।

आश्रित चर (Dependent Variables)

सांवेगिक समायोजन स्तर।

स्वतंत्र चर ((Independent Varables)

समाजिक आर्थिक स्तर (Socio Economic Status)

आर्थिक शब्द सामान्यतः धनोपार्जन करना, सम्पत्ति बनाना जैसे कार्यों के लिए प्रयोग किया जाता है इसलिए सामाजिक आर्थिक स्तर किसी व्यक्ति को वह जिस समाज में रहता है उसके द्वारा, उसकी भौतिक सम्पत्ति एवं सांस्कृतिक अधिकार जो उसके मान, सम्मान और प्रभाव के आधार पर प्राप्त हुए हैं। इन दोनों के सम्मिश्रण पर दिया गया हुआ दर्जा है।

आत्महीनता

विकसित एवं परिष्कृत व्यक्तित्व का अर्थ है। अपनी मान्यता को स्पष्ट किन्तु नम्र व सन्तुलित शब्दों में कहना। इस तथ्य का अभाव मनुष्य की कमियों को दर्शाता है। यह कमी शारीरिक की अपेक्षा मानसिक अधिक होती है।

आत्महीनता ऐसी ही एक महाव्याधि है जो मनुष्य के अन्तःकरण में नाना प्रकार की भ्रमात्मक, त्रुटियों, न्यूनताओं, कमजोरियों की कल्पना करा देते हैं।

आचार्य श्रीराम शर्मा जी के अनुसार 'आशा, आकांक्षा आत्मविश्वास, आत्मबल जिनको उन्नति और प्रग्रति का आधार माना गया है। आत्महीन व्यक्ति में सर्वथा उनका अभाव रहता है।' (वा.21 पेज 12–13)

असुरक्षा

जब भी अर्ध्वगामी गतिशीलता होती है तो व्यक्ति में असुरक्षा का भाव उत्पन्न होता है इससे व्यक्ति की जिन्दगी का प्रत्येक पहलू प्रभावित होता है। परन्तु इसका सबसे बुरा प्रभाव सामाजिक सम्बन्ध पर पड़ता है। असुरक्षा के भाव व्यक्ति में कई तरह से उत्पन्न होते हैं। पहला सुरक्षा का भाव व्यक्ति में अति–अनुपालन का भाव उत्पन्न कर देता है। इस अति अनुपालन का यह होता है कि व्यक्ति व्यक्तित्व समाप्त हो जाता है। व्यक्ति दूसरों के विचारों के बिना किसी आलोचना के ही स्वीकार करने के लिए बाध्य होते हैं। दूसरा उर्ध्वगामी गतिशीलता व्यक्ति में स्तर चेतना उत्पन्न करता है जिससे उनका आत्म समप्रत्यय बहुत हद तक विकसित होता है।

आधुनिकीकरण

यह एक महत्वपूर्ण सम्प्रत्यय है जिसका प्रयोग सामाजिक परिवर्तन के सन्दर्भ में किया जाता है। आधुनिकीकरण में सामाजिक सम्बन्धों में होने वाले सभी तरह के परिवर्तना को सामाजिक मूल्यों में होने वाले परिवर्तनों को सम्मिलित किया जाता है। इसमें सामाजिक आर्थिक संगठन में होते हैं। यह सम्प्रत्तय पश्चिमीकरण से भिन्न है। क्योंकि पश्चिमीकरण में सिर्फ उन्हीं परिवर्तनों को सम्मिलित किया जाता है जो पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण हुए हैं। जबकि आधुनिकीकरण में किसी संस्कृति विशेष का प्रभाव नहीं होता है। बल्कि नवीनतम एवं आधुनिकीकरण प्रविधियाँ, सिद्धान्तों एवं मूल्यों की प्रधानता के कारण परिवर्तन होता है।

आश्रित चर

सांवेगिक समायोजन

वर्तमान युग की इस विकृत व्यवस्था की विशेष मांग वातावरण के साथ समायोजन है। समायोजन जीवन के प्रत्येक पहलू में आवश्यक है जो कि मानव जीवन को विकसित व सफल बनाने में सहायक होता है तथा मनुष्य का मनुष्य से मधुर व सौम्य तारतम्य स्थापित करता है। यह समायोजन क्रियाशील रहे,

इसके लिए उसका सांवेगिक होना आवश्यक है क्योंकि संवेग इसे आवश्यक ऊर्जा प्रदान कर गतिशील करता है। सांवेगिक समायोजन व्यक्ति को मानसिक रूप से दृढ़ व पुष्ट बनाता है तथा भावनाओं एवं विचारों को स्वस्थ रखता है। सांवेगिक समायोजन के द्वारा व्यक्ति दूसरों की भावनाओं, विचारों एवं संवेदनाओं को सम्पन्नता व सम्मान देना सीखता है।

पं. श्रीराम शर्मा आर्चाय जी के अनुसार ' जो व्यवहार अपने लिए चाहते हों वही व्यवहार दूसरों के साथ करों' इस बात की पुष्टि करता है कि यदि संवेदनाओं एवं भावनाओं को समझेंगे तो दूसरा भी हमारी संवेदनाओं को समझेंगे और उसका आदर करेंगे। आधुनिक जीवन शैली इस बात से पीड़ित है कि प्रत्येक मनुष्य को नजर अंदाज करता है जिस करण आज प्रत्येक परिवार, समाज तथा राष्ट्र में बिखराव आ गया है इससे हर कोई एकाकी जीवन जीने को विवश है और यही उसके दुखों का प्रमुख कारण बन गया है। यदि व्यक्ति का सांवेगिक समायोजन ठीक हो तो वह समाज परस्त होगा, सहभागिता से जीना सीखेगा और अपने तथा समाज के लिए प्रगति का पथ प्रशस्त करेगा। अतएव सांवेगिक समायोजन का आज के समाज में विशेष महत्व है।

चर तथा उनका मापन

स्वतंत्र चर	मापन उपकरण
1. सामाजिक आर्थिक आयाम	स्वनिर्मित प्रश्नावली
2. असुरक्षा तथा आत्महीनता	पी.सी. पाती द्वारा निर्मित प्रश्नावली
3. आधुनिकीकरण	आर.एस. सिंह, ए.एन. त्रिपाठी रामजी लाल द्वारा निर्मित प्रश्नावली
4. आध्यात्मिक स्तर	स्व निर्मित प्रश्नावली
आश्रित चर	
(1) सांवेगिक समायोजन	स्व निर्मित प्रश्नावली

प्रतिदर्श चयन परियोजना (Sampling Plan)

इस शोध के लिए शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों से अलग–अलग आंकड़े एकत्रित किए जायेंगे। इसके लिए शहरी क्षेत्रों में हरिद्वार तथा मेरठ शहर का चयन किया

जाएगा तथा ग्रामीण क्षेत्रों में इन दोनों शहरों से लगे हुए प्रखण्ड हरिपुर कलां, वाया–रायवाला, देहरादून एवं जगजीतपुर, हरिद्वार से कंकरखेड़ा तथा सरधना, मेरठ से चुने जायेंगे। इन क्षेत्रों का चुनाव इसलिए किया जायेगा क्योंकि शोधकर्ता इन स्थानों से अच्छी तरह परिचित है जो आंकड़े एकत्रित करने में सहायक होगें।

हरिद्वार शहर से मायापुरी एवं ज्वालापुर तथा मेरठ शहर से चन्द्रलोक साबुन गोदाम, ब्रहमपुरी मोहल्लों का चयन किया जायेगा। इन चयनित मोहल्लों से 25–25 परिवारों को रेण्डम विधि से चुना जायेगा।

ग्रामीण क्षेत्रों में चयनित प्रखण्डों के मुख्यालय के सार्वधिक करीब वाले गॉव का चयन किया जायेगा। पुनः इन गॉवों से 25–25 परिवारों का रेण्डम विधि से चयन किया जायेगा। जिन परिवारों में सास–बहू होगी उन्हीं परिवारों को लिया जायेगा।

इस प्रकार 50 प्रतिदर्श जोड़ी शहरी क्षेत्र से तथा 50 प्रतिदर्श जोड़ी ग्रामीण क्षेत्र से चयन कर उसे शोध के लिए आंकड़े इक्कट्ठे किए जायेंगे। कुल मिलाकर 200 प्रतिवादी चयनित होंगे। जिनका स्वतंत्र रूप से साक्षात्कार किया जायेगा।

परिकल्पना (Hypothesis)

1. परिवार के सामाजिक आर्थिक स्तर का 'सास–बहू के सम्बन्ध' पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
2. सास–बहू की शिक्षा के स्तर का उनके सम्बन्ध पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
3. शहरी तथा ग्रामीण परिवेश से 'सास–बहू के सम्बन्ध' पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
4. आत्महीनता की भावना का 'सास–बहू के सम्बन्ध' पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
5. असुरक्षा की भावना का 'सास–बहू के सम्बन्ध' पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
6. आधुनिक दृष्टिकोण का 'सास–बहू के सम्बन्ध' पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
7. आध्यात्मिक विचार स्तर का 'सास–बहू के सम्बन्ध' पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

सांख्यिकी विश्लेषण (Statistical Analysis)

परिकल्पनाओं की जॉच हेतु उपयुक्त सांख्यिकी विश्लेषण का प्रयोग किया जोयगा।

Reference

1. Aponte, H. (1976). The family-school inteview: An eco-structural approach. Family Process, 15, 303-311. Madsen, W. (2000). Collaborative therapy with multi-stressed families: from old problems to new futures. New York, NY: Guilford Press.
2. Atwood, J.D.& Weinstein, E. (2000) Family practice, family therapy, a collaboration of dialogue, http:/www.priory.com/psych/family.htm
3. Batlle-Santiago, M.a. (1997). A lesson on love: Caring for the terminally ill. In S.H. McDaniel, J. Hepworth & W.J. Doherty (Eds.), The shared expereince of illness: Stories of patients, families, and their therapists (pp. 325-333). New York.
4. C.P. Khokhar and Yama Thakur (1968). "Economic condition married life span and personality factors of adjusted and maladjusted spouse. "Prachi-Hournal of Psycho-cultural dimensions Vol – 14, No – 2 (oct-1998).
5. Chasin, R., Herzing, M., Roth, S., Chasin, L., Becker, C., Stains Jr., R.R. (1996). Form diatribe to dialogue on divisive public issues: Approaches drawn from family therapy. Meditation Quarterly, 13 (4), 323-344.
   http:/www.publicconversations.
   org/pcp/rsources/resource_detail. asp? ref_id=61
6. Dorgra, A., & Veeraraghavan, V. (1998). "Marital relationship, child adjustment and emotional conduct disorder in children – An emprical study". Behaviroual Medicine Hournal (1998), (1), 31-41.
7. Gunn, W.B. (1997). Unsspeakable pain: The impact of stroke on the family. In S.H. McDaniel, J. Hepworth & W.J. Doherty (Eds.), The shared experience of illness: Stories of patients, families, and their therpaists (pp. 300-309). New York.
8. Kemp, S.P., Whitaker, J.K., & Tracy, E. M. (2000). Family group conferencing as person-environment practice. In G. Burford & J.

Hudson (Eds.), Family group conferencing: New directions in comunity-centrered child & family practice (pp. 72-85). New York.

9. Khokhar, C.P. & Agarwal, Anjali (1999). "Martial Adjustment and its effect on parenting". Indian Hournal of Psychometry and education, 1999, (30), (2), 127-132.
10. Landau, J. (1997). Whispers of illness: Secrecy versus trust. In S.H. McDaniel, J. Hepworth & W.J. Doherty (Eds.), The shared experience of illness: Stories of patients, families, and their therapists (pp.13-22). New York.
11. P. Kumar and Rupa P. Maniyar (1987). "Sexuality and Marital Adjustment". Prachi-Journal of Psycho-cultural Dimensions Vol-3, No-1&2 (April-Oct. 1987).
12. Panna, Akhani and Neelam Sharma (1999). "Indian Wives-Their Roles, Marital adjustment and counseling". Pracvhi-Journal of Psycho-cultural Dimensions Vol 15, No –1 (April01999).
13. Pattanayak, B., panda, Minati, Mohanty, Susmita (1997). "Impact of family strucuter and gender bias on stress and coping styles. An empirical study". Indian Psychological Abstracts and Reviews. Vol (4) No – 1 (Jan-June-1997).
14. Pulleyblank, E. (2204). The heart of the matter 2: Integration of ecosystemic family terapy practices with systems of care mental health services for children and families. Family Process, 43 (2), 161-173.
15. Waldegrave, C. (2000). " Just thrapy" with families and communities. In G. Burford & J. Hudson (Eds.), Family group conferencing: New directions in community-centred child & family practice (pp. 153-163). New York

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शर्मा आचार्य पं0 श्रीराम 'अखण्ड ज्योति' मासिक पत्रिका (1996) अप्रैल, प्रकाशक अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा।
2. शर्मा आचार्य पं0 श्रीराम (1998)– 'हमारी भावी पीढ़ी और उसका नव निर्माण' वाड्.मय 63।
3. श्रीवास्तव, डी.एन, सिंह रंजीत, पाण्डेय जगदीश (2000–2001) – 'आधूनिम समाज मनोविज्ञान'।
4. सिंह अरूण कुमार, सिंह आशीष कुमार (2002) – 'व्यक्तित्व का मनोविज्ञान', नरेन्द्र प्रकाश जैन, मोती लाल बनारसी दास, दिल्ली।
5. सिंह अरूण कुमार (2002)– 'समाज मनोविज्ञान की रूपरेखा' नरेन्द्र प्रकाश जैन, मोती लाल बनारसी दास, दिल्ली।
6. त्रिपाठी लाल बच्चन (2002–2003)– 'आधूनिक सामाजिक मनोविज्ञान'

----------00000----------